GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
ISSN 2348-2397
UGC Approved Care Listed Journal

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 25 • January to March 2020

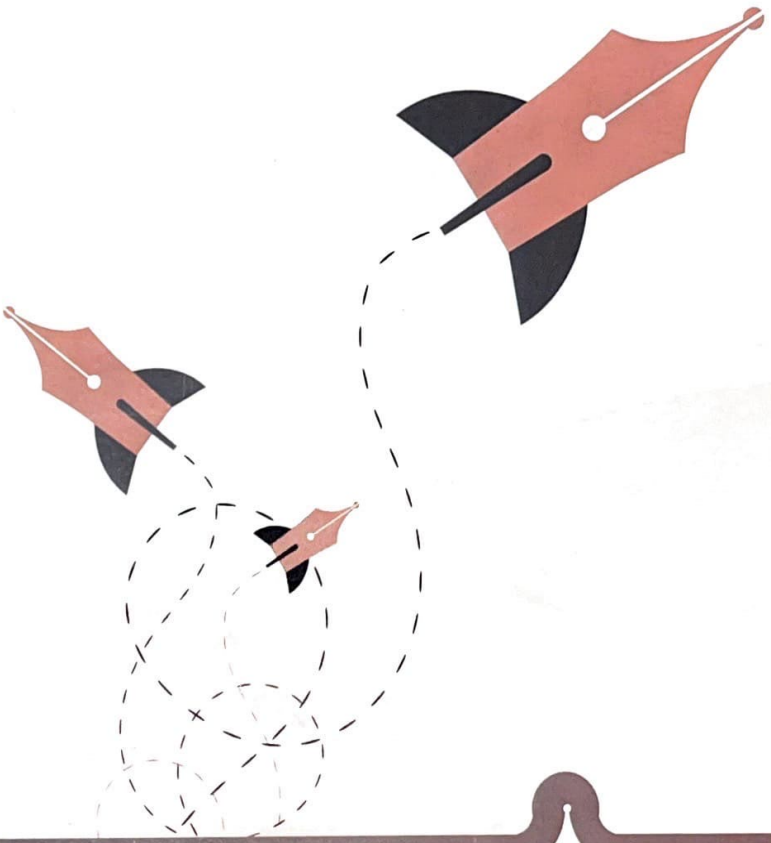

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

SHODH SARITA FAMILY

Honorary Patrons

Prof. Harmohinder Singh Bedi
Chancellor – Central University of Himachal Pradesh , Dharamshala

Prof. Sangita Srivastava
Vice-chancellor – Prof.Rajendra Singh (Rajju Bhaiya) University , Prayagraj

Prof. Anil Shukla
Vice-chancellor - Mahatama Jyotiba Phule Rohilkhand University , Bareilly

Gopal Chaturvedi
Former Executive Chairman
Uttar Pradesh Bhasha Sansthan, Lucknow

Editorial Advisory Committee

Prof. Arun Kumar Bhagat
Mahatma Gandhi Central University, Motihari (Bihar)

Prof. Harishankar Mishra
Lucknow University, Lucknow

Prof. Govind Ji Panday
Babasaheb Bhimrao Ambedkar Central University, Lucknow

Prof. Ram Kali Saraf
Banaras Hindu University

Prof. Sheela Mishra
Usmania University, Hyderabad

Dr. Asheesh Srivastava
Mahatma Gandhi Central University, Motihari (Bihar)

Dr. Rakesh Rai
Nagaland University, Kohima, Nag[illegible]

Dr. Neeraj Shukla
Khwaja Moinuddin Chishti Lang[illegible]rsity, Lucknow

Dr. Madhusudan Joshi
Central University of Hyderabad

Dr. Praveen Tiwari
M.J.P. Ruhailkhand University, Bareilly

Special Advisory Committee

Prof. Sadanand Gupta, Executive Chairman U.P. Hindi Sanstha
Dr. Daau Ji Gupt, Chairman- Akhil Vishva Hindi Samiti.
K.K. Yadav (IPS), Director, Postal Services, Lucknow
Narayana Kumar- Active Hindi Sevi, New Delhi
Prof. S. Rituparn, Director- Birla Foundation, New Delhi
Prof. T.N. Shukl, Chairman- Bhartiya Sahitya Parishad
Prof. Suryakant Tripathi, Tezpur University, Tezpur, Assam
Prof. H. Subadani Devi, Manipur University, Manipur.
Dr. kavita Tyagi, Dr. Shakuntala Mishra University, Lko.
Prof. Ramesh Chandra Tripathi, University of Lucknow
Prof. Arun Hota, Paschimvang University, Kolkata
Prof. Alka Pandey, Lucknow University, Lucknow

Foreign Editorial Advisory Committee

Prof. Vinod Kumar Mishra
Secretary General, World Hindi Secretariat, Mauritius

Dr. Sher Bahadur Singh
Chairman, International Hindi Association, New York, America

Prof. Pushpita Awasthi
Director Hindi Universe Foundation, Netherlands

Prof. Alka Dunputh
Mahatma Gandhi Sansthan, Moka, Mauritius

Ramess Ramburn
President, Hindi speaking Union Mauritius

Archana Painuly
Prominent Writer, Denmark

Dr. Mahendra Kishore Verma
York University, United Kingdom

Dr. Bindeshwari Agrawal
New York University, New York

Ramesh Joshi
Chief Editor- Vishwa, Ohio, America

GOVT. OF INDIA - RNI No. UPBIL/2014/56766

ISSN No. 2348-2397

UGC APPROVED
CARE LISTED JOURNAL

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFERED RESEARCH JOURNAL

शोध सरिता

* Vol. 7 * Issue 25 * January - March 2020

संपादक मण्डल

प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो0 सन्त राम वैश्य
गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रो0 कुमुद शर्मा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो0 परमेश्वरी शर्मा
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

प्रो0 सुधीर प्रताप सिंह
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रो0 राम प्रसाद भट्ट
हेम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

प्रो0 एस. चैल्लै
मदुरई कामराज, विश्वविद्यालय, मदुरई

प्रो0 एम. पी. शर्मा
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रो0 गिरीश पंत
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रो0 अजय कुमार भट्ट
एमिटी विश्वविद्यालय, हरियाणा

प्रो0 अब्दुल अलीम
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

प्रो0 राकेश राय
नागालैण्ड विश्वविद्यालय, कोहिमा

प्रधान संपादक

डॉ. विनय कुमार शर्मा
अध्यक्ष
संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ

संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ (उ0प्र0), भारत द्वारा प्रकाशित

PUBLISHER
Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow (U.P.) INDIA

PRINTER
Aradhya Prakashan, 448 /119/76
Kalyanpuri Thakurganj, Chowk, Lucknow-226003 U.P.

SUBSCRIPTION / MEMBERSHIP FEE

Single Copy (Special Order) **Rs. 300/-**
Individual / Institutional

	FOR INDIANS	FOR FOREIGNERS	
One Year	Rs. 1000.00- (with Postal Charges)	Single Copy	US$60.00-
Five Years	Rs. 5,000.00- (with Postal Charges)	One year	US$150.00-
Life Time Membership	Rs. 10,000.00- (with Postal Charges)		

SPECIAL

All the Cheques/Bank Drafts should be sent in the name of the **SHODH SARITA**, payable at Lucknow.
All correspondence in this regard should be sent by **Speed Post** to the **Managing Editor, SHODH SARITA**

CHIEF EDITORIAL OFFICE

Dr. Vinay Kumar Sharma
M.A., Ph.d., D.Litt. - Gold Medalist
Awarded by the President of India

Editor in Chief - SHODH SARITA
448 /119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW -226003 U.P.
Cell.: 09415578129, 07905190645
E-mail : serfoundation123@gmail.com

Publisher, Printer & Editor :-

Dr. Vinay Kumar Sharma Published at 448 /119/76 ,Kalyanpuri Thakurganj, Chowk, Lucknow-226003 U.P. and printed by Aradhya Prakashan, 448 /119/76, Kalyanpuri Thakurganj, Chowk, Lucknow-226003 U.P.

- The Views expressed in the articles printed in this Journal are the personal views of the Authors. It is not essential for the Shodh Sarita Patrika or its Editorial Board to be in agreement with the views of Authors.
- Any material published in this Journal cannot be reprinted or reproduced without the written permission of the editor of the Journal.
- *Printing*, Editing, selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
- *All disputes* will be subject to Lucknow jurisdiction only.

20.	नरेंद्र कोहली के रामकथा पर आधारित उपन्यास में समकालीनता	डॉ0 जयलक्ष्मी एफ. पाटील	81
21.	हिंदी साहित्येतिहास में उत्तर–मध्यकाल के नामकरण की समस्या	कपिल कुमार गौतम	85
22.	बिहार में सतत् एवं समावेशी विकास पर मनरेगा का प्रभाव	प्रेम शंकर गोंड	89
23.	डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर के एतिहासिक उपन्यास कुली बैरिस्टर (महात्मा गाँधी)	सम्पूर्णानन्द गौतम	99
24.	हिन्दी सिनेमा में स्त्री की छवि	डॉ0 मनोज कुमार स्वामी	104
25.	वैश्विक सन्दर्भ में अनुवाद की उपादेयता	डॉ0 विकास कुमार	107
26.	प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप	डॉ0 अन्जु बाला	110
27.	नगर पालिका निगम दुर्ग के जलकार्य विभाग के आय–व्यय का मूल्यात्मक अध्ययन	अंकिता नामदेव डॉ0 एच0 एस0 भाटिया	113 116
28.	विश्व पटल पर हिन्दी और उसकी चुनौतियाँ	डॉ0 हरि नाथ	122
29.	पहाड़ों में पलायन और समकालीन हिंदी उपन्यास (उत्तराखण्ड के सम्बन्ध में)	रवि यादव	126
30.	समावेशी शिक्षा – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चुनौतियाँ	सुगन्ध कुमार	129
31.	धमतरी नगर निगम के पेयजल व्यवस्था का विश्लेषण	मंजू गोस्वामी डॉ0 आर0 के0 पुरोहित सुभाष चन्द्राकर	135
32.	सोशल मीडिया पर सूचना की विश्वसनीयता व सामाजिक प्रभाव	डॉ0 सुधारानी सिंह	138
33.	माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन	शिव नारायण डॉ0 रश्मि गोरे	141
34.	अरविंद–दर्शन में 'रूपांतरण' एवं 'अतिमानस' की अवधारणा	डॉ0 अनिल राय	147
35.	बद्री सिंह भाटिया के कथा–साहित्य में मनोविज्ञान	सुषमा देवी	151
36.	सूरदास और माधवदेव की रचनाओं में वात्सल्य भावना : एक अध्ययन	डॉ0 प्रीति वैश्य	155
37.	शान्ति शिक्षा एवं इसके विविध पक्षों में निहित घटक तत्व	अश्विनी कुमार पाठक एन0पी0 भोक्ता	159
38.	भारतीय संविधान में हिन्दी और राजभाषा अधिनियम	डॉ0 यामिनी राय	163
39.	आधुनिक भारत मे महिलाओं की दशा	देव कुमार	166
40.	सूर्यबाला के कथा साहित्य में चित्रित समाज के विविध आयाम	डॉ0 आशा कुमारी	170
41.	कबीर : मानुष ऐसा चाहिए	सत्येन्द्र कुमार दुबे	173
42.	स्त्री सशक्तिकरण : शक्तिस्वरूपा सशक्त सीता	सीमा दुबे	177
43.	पूर्वोत्तरीय संस्कृति में मानवीय तत्व	प्रो0 सुशील कुमार शर्मा	181

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 113-115
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप

❐ डॉ0 अन्जु बाला*

शोध सारांश

प्रवासी शब्द का प्रचलित अर्थ है विदेश या परदेश में रहने वाला। प्रवासी शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है जो शौंक या मजबूरीवश दूसरे देशों में रहने लगे या स्वंय रोज़गार की तलाश में अन्य देशों में गए और वहीं बस गए। घर परिवार से दूर रहकर अपनी पहचान के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने अपनी भावनाओं, अनुभूतियों तथा व्यथाओं को जब शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया तभी प्रवासी साहित्य की नींव पड़ी। आज का प्रवासी साहित्य बंधुआ मज़दूरों की पीड़ा से भिन्न है क्योंकि आज की पीढ़ी के प्रवासी अपनी इच्छा से प्रवास कर रहे हैं। अतः उनकी विचारधारा भिन्न है पर अपने देश व परम्परा से उनका लगाव उन्हे अपने मातृभूमि से जोड़े रखता है। अपनी मातृभूमि के प्रति अपनी संवेदनाओं को सहेजना तथा उन्हे रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करना ही प्रवासी साहित्य कहलाता है।

Keywords : प्रवासी साहित्य, गिरमिटिया, संवेदनशील, भूमंडलीकरण, संस्कृति।

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहां से लोग बड़ी संख्या में दूसरे देशों में पलायन करते हैं। आज भूमंडल के विभिन्न देशों में भारतवासी बसे हैं। विदेश जाकर रहना, बसना तथा उसके साथ लेखन कार्य भी करना उन्हें विशेष पहचान दिलवाता है। प्रवासी साहित्यकार अपने लेखन के माध्यम से अपने अनुभवों तथा अपनी भावनाओं को अपने घर, अपने देश तक पहुचाते हैं जिस के माध्यम से दूसरे देशों की सामाजिक, सास्कृंतिक तथा भौतिक झलक के दर्शन हो जाते हैं।

अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रवासी साहित्यकार यदि विदेशी भाषा में करें तो वह साहित्य संवेदनशील नहीं होगा क्योंकि साहित्य उसी भाषा में लिखा जाता है जिस भाषा के सस्कार बचपन में मिले हों। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा से पहले हमारी मातृभाषा है। यही कारण है कि प्रवासी भारतीय अपने देश व भाषा प्रेम के कारण अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी भाषा का चयन करते हैं।

हिन्दी का प्रवासी सहित्य नये युग का साहित्यिक विमर्श है जो राजनीति, अर्थ, समाज, उद्योग, संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर रहा है। अतः प्रवासी साहित्य नये युग की वाणी है।

बीसवी शताब्दी के अंतिम चार दशकों में हिन्दी प्रवासी साहित्य में तेजी आई। हिन्दी में प्रवासी साहित्य तथा प्रवासी हिन्दी साहित्यकार की अलग पहचान बनने लगी। भारतीय परिवेश को विदेशों की भूमि में भी जीवंत रखने वाले प्रवासी रचनाकारों के योगदान के कारण ही पूरे विश्वभर में आज हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य जीवित है।

प्रवासी हिन्दी को प्रारभिक स्वर महात्मा गाधीं द्वारा प्राप्त हुआ। उनका संबंध यूरोपीय देशों में जाकर रहने वाले भारतीय शिक्षित वर्ग से था तथा साथ ही दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस आदि देशों में जाकर व्यापार करने वाले गिरमिटिया मज़दूरों से था। महात्मा गांधी ने सन् 1901 में इंडियन नेशनल कांग्रेस अधिवेशन में गिरमिटिया मज़दूरों के पक्ष में एक प्रस्ताव पारित करवाया। तीसरी सदी के दूसरे दशक में पं.0 बनारसी दास चतुर्वेदी ने प्रवासी भारतीयों के उत्थान के लिए कार्य किया। उन्होने सन् 1914 में 'फीजी में मेरे इक्कीस वर्ष' नामक पुस्तक लिखी। इसके पश्चात् उन्होंने 'फीजी में भारतीय' तथा 'फीजी की समस्या' नामक पुस्तक लिखी जो प्रवासी भारतीयों की पीड़ा, समस्याओं तथा कल्याण को ध्यान में रखकर लिखी गई।

सन् 2001 में मॉरीशस की संसद द्वारा 'रामायण सेंटर' की स्थापना एक अधिनियम पारित करके की। मॉरीशस , गुयाना, फीजी , सूरीनाम, त्रिनिदाद और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में प्रतिदिन घरों , मंदिरों तथा सामाजिक, सांस्कृतिक सस्थाओ के केन्द्रों में रामायण का पाठ चलता है। रामायण मंडलियां बनी हुई हैं जो घर –घर जाकर रामायण का सत्संग करती हैं।

हिन्दी के प्रवासी साहित्य ने अपना एक संसार रचा, जो चाहे छोटा ही था परन्तु उसने एक अलग साहित्य संसार की

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, गुरू नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर

रचना की जो पूरे विश्व में निरन्तर फैलता गया । अब वह केवल मॉरीशस तक सीमित न था। उसका परिदृश्य वैश्विक बन गया। विश्व के कई देशों में विश्व हिन्दी सम्मलेन हुए। भारत के हिन्दी लेखकों तथा प्रवासी हिन्दी लेखकों का भारत में सम्मान होने लगा। प्रवासी लेखकों की कृतियाँ भारत मे छपती रही और उसे हिन्दी की मुख्य धारा में उचित स्थान देने की माँग उठने लगी। हिन्दी साहित्य में इस ओर प्रयत्न शुरू किये गए। आज स्थिति यह है कि मॉरीशस, अमेरिका तथा इंग्लैड़ तीन ऐसे प्रमुख देश हैं जहाँ प्रवासी भारतीयों की संख्या सर्वाधिक है। यही कारण है कि इन देशों में हिन्दी लेखकों की संख्या भी सबसे अधिक है। आज कई देशों में हिन्दीं का प्रचार– प्रसार पूर्ण रूप से हो रहा है। विदेशों में भी हिन्दी भाषा सिखाई जा रही है। हिन्दी सेवी लोग हिन्दी का विकास चहुँओर कर रहे हैं।

चिंता का विषय तो यह है कि हमारे भारतीय आलोचक तथा हिन्दी विद्वान प्रवासी हिन्दी साहित्य को हिन्दी साहित्य के इतिहास में जगह नहीं देते। वह प्रवासी हिन्दी साहित्य को हिन्दी साहित्य का अंग नहीं मानते। यहाँ तक कि हमारे देश के विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के हिन्दी पाठ्यक्रम में प्रवासी हिन्दी साहित्य को स्थान नहीं मिला है। भारतीय पाठक प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवधारणा से अनभिज्ञ हैं। उसके लेखक तथा उसकी रचनाओं से अनभिज्ञ हैं। प्रवासी हिन्दी साहित्य भी साहित्य का अंग है। इसने भी हिन्दी साहित्य को पूर्णता प्रदान की है। इसे विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में एक विषय के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

हर्ष की बात तो यह है कि आज वेब पत्रिकाओं में प्रवासी हिन्दी साहित्य में विभिन्न लेखन कार्य देखने को मिल रहा है। इस बात की भी खुशी है कि कुछ हिन्दी साहित्यकार प्रवासी हिन्दी साहित्य को हिन्दी साहित्य का अंग स्वीकार करने के पक्ष में हैं। डॉ. बलशौरि रेड्डी का कथन है–"हिन्दी का साहित्य जहाँ भी रचा गया हो और जिसने भी रचा हो, चाहे वह जंगलों में बैठकर लिखा गया हो या खलिहानों में, देश में हो या विदेश में, लिखने वाला कोई आदिवासी हो, या अमेरिका के भव्य भवन का रहवासीस, वर्ण, जाति, धर्म और वर्ग की सोच से परे, अपनी अनुभूतियों को अगर हिन्दी भाषा में एक कलात्मक स्वरूप देता है तो वह लेखक हिन्दी भाषा में लिखने वाला कलमकार होता है और उसका रचा साहित्य हिन्दी का ही साहित्य है।"

उन्नीसवीं सदी में जो भारतीय विदेश गए उनमें अधिकतर हिन्दी भाषी क्षेत्र से ही गए थे। अपनी मातृभूमि को छोड़कर विदेश गया व्यक्ति प्रवासी ही रहता है। वह अपनी भाषा और संस्कृति को पकड़े रहना चाहता है पर नये देश को अपनाने की तथा उसे अपना बनाने की भी उसकी विवशता है क्योंकि उसे उस देश में रहना है। यही दुविधा प्रवासी साहित्य की मूल संवेदना के रूप में उभरकर सामने आती है।

डॉ. कमल किशोर गोयनका कहते है–"हिन्दी [illegible] समझकर प्रवासी साहित्य को पढ़ता है कि वह अनजान [illegible] रहने वाले अपने भारतीयों के जीवन के साथ उस देश के [illegible] और समाज को भी जानना चाहता है क्योंकि जिस देश में [illegible] भारतीय रहेगा उस देश का परिवेश, जीवन प्रणाली, [illegible] सरोकार आदि सभी उसके जीवन तथा सोच को प्रभावित [illegible] प्रकृति हो या मानवीय समाज, संस्कृति हो या भाषा [illegible] इनके भिन्न–भिन्न मानव समूहों, समाजों और संस्कृ[illegible] साहित्यिक प्रदायों और अवधारणाओं के सम्मिलन ने एक [illegible] मानवीय समाज की सृष्टि को संभव बना दिया है।"

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार विदेश में निवास कर [illegible] प्रेमी होने के कारण अपने सुख – दुःख, भावना , विचार [illegible] अनुभूति को हिन्दी साहित्य के माध्यम से प्रकट करते हैं। [illegible] चर्चित प्रवासी हिन्दी साहित्यकार हैं – सोमावीरा, उशा प्रियं[illegible] उशा राजे सक्सेना , धनजंय कुमार , सुधा ओम ढींगरा आदि। [illegible] भी हिन्दी का साहित्य विदेश में लिखा जा रहा है वह हिन्दी का [illegible] साहित्य है। वह हिन्दी साहित्य का ही अंग है। उसे हिन्दी साहि[illegible] के इतिहास में स्थान मिलना चाहिए। वह हिन्दी साहित्य [illegible] इतिहास की ही एक शाखा है। उसे विद्यालय तथा विश्वविद्या[illegible] के पाठ्यक्रम में भी स्थान मिलना चाहिए जिससे हमारे देश [illegible] लेखक, पाठक तथा छात्र लाभान्वित हो सकें। लेकिन चिंता [illegible] बात तो यह है कि हमारे भारतीय आलोचक, हमारे विद्वान प्रवा[illegible] हिन्दी साहित्य को हिन्दी साहित्य के इतिहास में जगह नहीं दे[illegible] वह इसके लिए उदासीन है। भारतीय पाठक प्रवासी हिन्[illegible] साहित्य से अनभिज्ञ हैं कि उसमें कौन कौन से लेखक हैं, कौन [illegible] कौन सी रचनाएँ हैं।

प्रवासी हिन्दी सहित्य केवल भावनाओं , विचारों [illegible] अभिव्यक्ति का ही साधन मात्र नहीं है अपितु ज्ञान विज्ञान [illegible] आदान– प्रदान का सशक्त माध्यम भी है। प्रवासी हिन्दी साहि[illegible] हिन्दी की अनेक विधाओं में लिखा गया, यथा – उपन्यास, [illegible] कहानियाँ, शोध, कविताएँ, महाकाव्य, खण्डकाव्य, अनूदि[illegible] साहित्य, आत्मकथा, भेंटवार्ता, नाटक , यात्रावर्णन आदि।

प्रवासी साहित्यकारों की कड़ी में सुमित्रानन्दन प[illegible] दिनकर , नागार्जुन के नाम उल्लेखनीय हैं। नागार्जुन के तो [illegible] विदेश में व्यापक भ्रमण किया। श्री लंका प्रवास के दौरान उन्हों[illegible] पालि भाषा सीखी और वहाँ के बौद्वों को सिखायी। उन्होंने [illegible] साहित्य का अध्ययन भी किया।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी अत्यन्त घुमक्क[illegible] स्वभाव के थे। वे महान पंडित, विद्वान तथा बहुत सी भाषाओं [illegible] ज्ञाता थे। उन्होने भारत तथा विश्व के अनेक देशों में भ्रमण कि[illegible] तथा वृतातों, जीवनी, आत्मकथा, कहानी तथा उपन्यासों की [illegible] की। श्री लंका , तिब्बत, रूस तथा जापान आदि देशों के भ्रमण [illegible] संबधित उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – मेरी तिब्बत यात्रा, [illegible]

पच्चीस मास तथा चीन में क्या देखा आदि।

सुषमा बेदी, उषा प्रियवंदा, सोमावीरा, अचला शर्मा, दिव्या माथुर आदि ऐसी अनेक लेखिकाएँ हैं, जो विदेशी भूमि पर रहते हुए भी हिन्दी साहित्य लेखन से भारतीय साहित्य संसार में अपना स्थान बना रही हैं। यथार्थ को अपने साहित्य में व्यक्त करने की कला में निपुण सुषमा बेदी जो अमेरिका के शहर न्यूयॉर्क में तीस वर्ष रहने के बाद भी अपने लेखन में भारतीय संस्कारों की महक को संजोये हैं। उनका लेखन पाठक के हृदय पर गहरी छाप छोड़ता है। उपन्यास हो या कहानी हर विधा के माध्यम से लेखिका ने प्रवासी जीवन की विशेषताओं तथा विसंगतियों का बखूबी चित्रण किया है। उनके प्रथम उपन्यास 'हवन' में यह दर्शाया गया है कि किस तरह प्रवासी भारतीय समाज विदेशी संस्कृति की बनावटी चकाचौंध में खोकर भौतिक सुख सुविधाओं को जुटाने में अपना जीवन अर्पित कर देता है अन्त में उसे अपने जीवन रूपी हवन कुंड से उड़ते हुए धुएं के समान आँखों में जलन के सिवाय कुछ नहीं मिलता। उशा प्रियंवदा हिन्दी की प्रवासी साहित्यकार है। विदेशों में रहकर उषा जी ने हिन्दी की अपार सेवा की है।

प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा भारतीयता को सुरक्षित रखा, हिन्दी को प्रवाहित रखा तथा जिंदा रखा। प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अलका शर्मा 'वॉयस ऑफ अमेरिका' में कुछ समय कार्यरत रही, बाद में लंदन बी. बी. सी. की हिन्दी सेवा की अध्यक्ष रही हैं। उनके लेखन में भारतीय समाज की संवेदना अभिव्यक्त हुई है। नीदरलैंड के एक विश्वविद्यालय में कार्यरत प्रोफेसर पुष्पित अवस्थी ने अपनी रचना 'छिन्दमूल' में मानवीय संवेदनाओं को शब्दों रूपी फूलों पर ओस की बूँदों की तरह प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार मॉरीशस के हिन्दी विद्वान अभिमन्यु, अनत का नाम विशेष उल्लेखनीय है जो मॉरीशस में रहकर हिन्दी सेवा कर रहे हैं। ' बवंडर बाहर भीतर, अस्ति अस्तु, आसमान अपना आँगन आदि इनकी प्रसिद्व रचनाएँ हैं। कृष्ण बिहारी जी अबूधाबी में हिन्दी के प्राध्यापक हैं। इन्होनें हिन्दी के कई एकांकी नाटकों का लेखन व निर्देशन किया है। लक्ष्मी मल्ल सिंघवी , जो लंदन में भारत को उच्चायुक्त रह चुके हैं, ने भी हिन्दी की बड़ी सेवा की है। इसी प्रकार श्री हरिशंकर आदेश जी, जो वेस्टइंडीज में भारत के उच्चायुक्त रह चुके हैं, की लगभग 300 हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्होने उपन्यास , कहानी, नाटक आदि की रचना भी की है तथा भगवद्गीता का हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद भी लिखा है। उषा वर्मा जी के भी कविता – संग्रह तथा चार कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उषा वर्मा लंदन में हिन्दी साहित्य सेवा में संलग्न है। इस प्रकार अनेक साहित्यकार प्रवासी हिन्दी साहित्य के सृजन में लगे हुए हैं।

प्रवासी साहित्यकार विश्व पटल पर हिन्दी को उच्च स्तर पर लाने एंव बनाए रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आज प्रवासी हिन्दी साहित्य के नये युग का प्रारम्भ हो चुका है। भूमंडलीकरण के इस दौर में हिन्दी भारत के साथ – साथ विश्व पटल पर प्रतिष्ठित हो रही हैं। आज विश्व के अधिकांश देशों में प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अपनी भाषा हिन्दी को शोभायमान कर रहे हैं। प्रवासी हिन्दी साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है। अभी इसके उन्नयन तथा परिमार्जन हेतु और अधिक प्रयास अपेक्षित हैं।

सन्दर्भ :–

1. डॉ0 बच्चन सिहं, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 248
2. डॉ0 कमल किशोर गोयनका : हिन्दी प्रवासी साहित्य पृष्ठ संख्या 16–17
3. प्रवासी संसार त्रैमासिक : जुलाई – सितम्बर 2008
4. डॉ0 रामसकल पाण्डेय, हिन्दी शिक्षण, पृष्ठ संख्या 38, अग्रवाल पब्लिकेशन्स , आगरा।
5. http://hi_m_wikibooks.org.

❑❑❑